5.2020

Dr. Purnima Singh
Department of political Science
B.A. Part - 1 paper 1
Basic principles of political Theory
Topic - Power, Authority and Legitimacy - 1
Lecture - 35

Power शक्ति का स्वरूप

राजनीति में शक्ति का प्रयोग बहुत विस्तृत क्षेत्र में होता है। यह शक्ति जिस-जिस रूप में राजनीति को प्रभावित करती है, उन्हे हम शक्ति के विविध आयाम कह सकते हैं। इस दृष्टि से तीन तरह की शक्ति की पहचान कर सकते हैं। (1) राजनीतिक शक्ति (2) आर्थिक शक्ति (3) विचारधारात्मक शक्ति

राजनीतिक शक्ति (Political Power)

इसका अर्थ है, समाज के मुल्यवान संसाधनो (valuable Resources) को अपनी इच्छा के अनुसार विभिन्न समुहों के हित में या विभिन्न कार्यक्रमो में लगाने की शक्ति। इससे नीतियां और कानुन बनाने, कानुनो को लागु करने, कर लगाने और वसुल करने, किसी वर्ग को आर्थिक सहायता (Subsidy) प्रदान करने, किसी वर्ग का कोई दायित्व (Liability) निर्धारित करने, कानुन या आदेश का पालन न करने वालों को पकड़ने और दंड देने, तथा शत्रुओं और आक्रमणकारियो को नष्ट करने की शक्ति आ जाती है। अतः पुलिस, न्यायालय कारागृह और सैन्य शक्ति भी राजनीतिक शक्ति के उपकरण है। साधारणत: राजनीतिक शक्ति का प्रयोग सरकार की विभिन्न

शाखाएं - विधानमंडल (Legislature) कार्यपालिका (Executive) और न्यायपालिका (Judiciary) करती है। इन्हें हम शक्ति के औपचारिक अंग (Formal organs) कहते है। परंतु इनके अलावा विभिन्न दवाव समूह (Pressure Groups), राजनीतिक दल (Political parties) और अन्य प्रभाव शाली लोग भी सार्वजनिक निर्णयों को प्रभावित करने की क्षमता रखते है। अत: वे भी अपने-अपने ढंग से राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते है। इन्हें हम शक्ति के अनौपचारिक अंग (Informal organs) कहते है,

राजनीतिक शक्ति के अनौपचारिक अंग किस-किस तरह अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं - ~~इसे हम~~ (1) स्वाधीन देशो मे जन-मत (Public opinion), जन-आंदोलन (Popular movements) और संगठित हित (Organized interests) सीधे ही निर्णय क्रिया (Decision-making) को प्रभावित करते है; लोकतंत्रो (Democracies) मे सत्तारूढ दल (Ruling Party) को नियमित अंतराल से चुनाव के मैदान मे उतरना पड़ता है और शासन के लिए जनता का आदेश प्राप्त करना पड़ता है;

(2) उपनिवेशो (colonies), पराधीन देशो (Dependencies) और अधिनायकतंत्रो (Dictator-ship) मे स्वाधीनता संघर्ष और प्रबल जन-आंदोलन देर-सवेर न केवल महत्वपूर्ण रियायतें प्राप्त कर लेते है बल्कि बहुधा स्वतंत्रता प्राप्त करने में भी सफल हो जाते है;

(3) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अनेक राष्ट्रों के संगठित समूह शक्तिशाली राष्ट्रों की नीतियो

को प्रभावित करते है। वर्तमान दौर में तीसरी दुनिया (Third world) के देश सर्वोच्च शक्तियों (super powers) को अपनी आर्थिक, सैनिक और विदेश नीतियां बदलने के लिए निरंतर प्रेरित करते रहते है। विश्व-शांति और विश्व के पर्यावरण की स्वच्छता बनाए रखने के लिए अनेक गैर-सरकारी संगठन (Non-Governmental organizations) भी विश्व राजनीति पर निरंतर दबाव डालते रहते है।

आर्थिक शक्ति (Economic Power)

इसका अर्थ है, धन-संपदा, उत्पादन के साधनों या अन्य दुर्लभ संसाधनों के स्वामित्व के बल पर निर्धन लोगों या निर्धन राष्ट्रों के जीवन की परिस्थितियों पर नियंत्रण स्थापित करने की शक्ति। आर्थिक शक्ति राजनीति पर व्यापक प्रभाव डालती है। उदाहरण के लिए, उदार लोकतंत्र (Liberal Democracy) के अंतर्गत बड़े-बड़े जमींदार, उद्योगपति और व्यापारिक घराने सार्वजनिक नीतियों और निर्णयों (Public policies and Decisions) को बहुत ज्यादा प्रभावित करते है और विकास की प्राथमिकताएं (Priorities) निर्धारित करने में अपने हित को बढ़ावा देने का प्रयत्न करते है। उदाहरण के लिए, भारत में इन्हीं वर्गों के दबाव के कारण देहातों के गरीब लोगों के लिए सब जगह 'पेय जल' (Drinking water) की आवश्यकता को पीछे धकेलकर शहरों के संपन्न लोगों के लिए रंगीन टी०वी० की आवश्यकता को प्राथमिकता दी गई।

उदार लोकतंत्र में आर्थिक शक्ति के स्वामी कई तरह से राजनीति को प्रभावित करते है। उनके दबाव समूह (Pressure groups)

जनसाधारण की तुलना में अधिक बलशाली, अधिक संगठित और अधिक मुखर होते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में वाणिज्य और उद्योग मंडल (Chambers of Commerce and Industry) अत्यंत संगठित और साधन-संपन्न हैं; कामगारों के संगठन उतने बलशाली नहीं हैं; किसानों के संगठन और भी शिथिल हैं, और उपभोक्ताओं के संगठन तो नहीं-के बराबर हैं। मुख्य-मुख्य समाचारपत्रों और पत्रिकाओं पर मुट्ठी भर व्यावसायिक घरानों (Business Houses) का आधिपत्य है, और वे अपने हितों के अनुरूप जन-मत को बढ़ावा देने के लिए इस माध्यम से भरपूर लाभ उठाते हैं। इसके अलावा, बड़े-बड़े पूंजीपति और धन्ना सेठ अक्सर चोरी-छिपे राजनीतिक दलों और चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को भारी वित्तीय सहायता (Financial Help) देते हैं। ऐसी सहायता पाने वाले राजनीतिज्ञ दोहरा खेल खेलते हैं। वे ऊपरी तौर पर जनसाधारण के हितों की दुहाई देते हैं, परंतु भीतर से वे अपने वित्तदाताओं के हितों की रक्षा के लिए वचनबद्ध होते हैं।

विचारधारात्मक शक्ति (Ideological Power)

विचारधारा (Ideology) — उन युक्तियों और मान्यताओं का समुच्चय जो किसी वर्तमान या अभीष्ट सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था को उचित ठहराने के लिए स्वीकार की जाती हैं,

विचारधारात्मक शक्ति राजनीतिक शक्ति का एक गुढ़ आधार प्रस्तुत करती है। विचारधारात्मक शक्ति से अभिप्राय है, किसी विचारधारा के बल पर लोगों के सोचने-समझने के ढंग को प्रभावित करने की शक्ति। विचारधारात्मक शक्ति किसी शासन या व्यवस्था को लोगों की दृष्टि में उचित ठहराती है, इसलिए यह उसे वैधता (Legitimacy) प्रदान करती है। किसी भी समाज में शासक वर्ग सर्वोत्तम शासन प्रणाली (Best System of Government) के बारे में कुछ विचारों को बढ़ावा देते हैं जिन्हें हम राजनीतिक विचारधारा (Political Ideology) कहते हैं।

विचारधारा उन युक्तियों और मान्यताओं का व्यवस्थित समुच्चय है जिन्हें किसी वर्तमान या अभीष्ट समाज-व्यवस्था को उचित ठहराने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए आज के युग में भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्थाएं प्रचलित हैं, और उन्हें उचित ठहराने के लिए पूंजीवाद (Capitalism), उदारवाद (Liberalism), साम्यवाद (Communism) समाजवाद (Socialism), या लोकतंत्रीय समाजवाद (Democratic Socialism), इत्यादि को सर्वोत्तम शासन प्रणाली सिद्ध करने की कोशिश की जाती है। ये सारे वाद विभिन्न विचारधाराओं के उदाहरण हैं।

राजनीतिक विचारधारा की मुख्य विशेषता यह है कि यह शासक वर्ग की सत्ता को सुदृढ़ बनाती है, क्योंकि जब लोग मन से उनकी नीतियों और निर्णयों का समर्थन करने लगते हैं तो वे उन्हें चुनौती देने को तत्पर नहीं होते।

समाज में शक्ति की भूमिका
(Role of power in society)

शक्ति (Power)

- **राजनीतिक (Political)**
  - **औपचारिक अंग (formal organs)**
    - विधानमंडल
    - कार्यपालिका (+ अधिकारितंत्र)
    - न्यायपालिका
  - **अनौपचारिक अंग (informal organs)**
    - लोकमत
    - दबाव समूह
    - राजनीतिक दल
    - जन आंदोलन
    - जनसंपर्क के साधन
- **आर्थिक (Economic)**
  - उत्पादन के साधनों का स्वामित्व
  - जनसंपर्क के साधनों का स्वामित्व और नियंत्रण
  - चुनावों के लिए वित्तीय सहायता
- **विचारधारात्मक (Ideological)**
  - सर्वोत्तम शासन प्रणाली से जुड़ी हुई मान्यताओं की स्थापना
  - शासकवर्ग की वैधता (Legitimacy) की स्थापना
  - जनसाधारण के सोचने समझने के ढंग पर नियंत्रण

संक्षेप में, शक्ति के उपयुक्त प्रयोग के लिए यह देखना पर्याप्त नहीं है कि इसके लिए प्रभावित पक्ष की सहमति प्राप्त कर ली गई है। इसके लिए यह देखना जरूरी है कि प्रभावित पक्ष की सहमति उपयुक्त शिक्षा, खुली चर्चा और तर्कसंगत सिद्धांतों पर आधारित हो- कोरे रीति-रिवाज, उपदेश, अंधविश्वास या तर्कशून्य धार्मिक आस्था पर आधारित न हो।